अंतरराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

INTERNATIONAL RESEARCH CONFERENC

सार्वभौमिक मूल्यों के प्रसार एवं संवर्धन में साहित्य, संस्कृति और धर्म–अध्यात्म की भूमिका

आयोजक – अक्षर वार्ता अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना एवं मौनतीर्थ सेवार्थ फाउंडेशन

8 मई 2016

प्रमाण — पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री/डॉ ...ज्योति मेवाल... संस्था ...प्रज्ञा शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन... ने अक्षर वार्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका, राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना एवं मौनतीर्थ सेवार्थ फाउंडेशन, उज्जैन के सहयोग से दिनांक 8 मई 2016 को सार्वभौमिक मूल्यों के प्रसार एवं संवर्धन में साहित्य, संस्कृति और धर्म – अध्यात्म की भूमिका पर केन्द्रित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता की।

इन्होंने ...वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बालमीत वस्तुस्थिति और सार्वभौमिक मानव संचेतना की भूमिका... विषय पर शोध पर प्रस्तुत किया/व्याख्यान दिया/सत्र की अध्यक्षता की।

डॉ. प्रभु चौधरी	डॉ.शैलेन्द्र कुमार शर्मा	डॉ.मोहन बैरागी
अध्यक्ष – राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना	प्रधान संपादक : अक्षर वार्ता	संपादक : अक्षर वार्ता
समन्वयक	मुख्य समन्वयक	समन्वयक

Scanned with CamScanner

अंतरराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

INTERNATIONAL RESEARCH CONFERENCE

भाषा, साहित्य और बदलता सामाजिक परिदृश्य : भूमण्डलीकरण की चुनौतियाँ

6-7 मार्च 2016

आयोजक : अक्षर वार्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका एवं संस्था कृष्णा बसंती

सहयोग : हिंदी अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री/डॉ. ज्योति मैथाल संस्था प्रशांति शिक्षा महा. उज्जैन ने अक्षर वार्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका एव संस्था कृष्णा बसंती उज्जैन द्वारा हिन्दी अध्ययनशाला विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के सहयोग से दिनांक 6-7 मार्च 2016 को भाषा, साहित्य और बदलता सामाजिक परिदृश्य : भूमण्डलीकरण की चुनौतियाँ पर केन्द्रित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता की।

इन्होंने 'पर्यावरण जलवायु परिवर्तन और भूमण्डलीकरण की चुनौतियाँ तथ जीवन का अंतर्संबंध' विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया / व्याख्यान दिया / सत्र की अध्यक्षता की।

डॉ. प्रेमलता चुटैल आचार्य एवं अध्यक्ष हिन्दी अध्ययनशाला विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन	डॉ. गीता नायक आचार्य हिन्दी अध्ययनशाला विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन	डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा प्रधान संपादक : अक्षर वार्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका आचार्य हिन्दी अध्ययनशाला एवं कुलानुशासक विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन	डॉ. मोहन बैरागी संपादक अक्षर वार्ता

Scanned with CamScanner

CERTIFICATE

8th INTERNATIONAL CONFERENCE

OF

INDIAN PSYCHOMETRICS AND EDUCATIONAL RESEARCH ASSOCIATION (IPERA), PATNA

ON

EVALUATION OF MODERN EDUCATIONAL SYSTEM

24-26 Sept., 2016

at

HARPRASAD INSTITUTE OF BEHAVIOURAL STUDIES (HIBS) AGRA.

This is to certify that Dr. / Mr. / Mrs. डॉ. ज्योति मैवाल (प्राचार्या)

प्रशान्ति कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडी, उज्जैन (म.प्र.) *has participated*

and also presented the paper entitled "आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के मूल्यांकन में

निर्देशन एवं परामर्शन सेवा की आवश्यकता"

Authorized Signatory
HIBS

26th September, 2016

Authorized Signatory
IPERA

Scanned with CamScanner

डॉ. अम्बेडकर पीठ

(सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली)

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर का 125वाँ जयंती समारोह

राष्ट्रीय संगोष्ठी

"डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के सामाजिक प्रजातंत्र की संकल्पना एवं प्रासंगिकता"

29-30 मार्च 2016

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि प्रो./डॉ ....ज्योति मेवाल.....

ने राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक 29-30 मार्च 2016 में प्रतिभागिता की "सामाजिक प्रजातंत्र में महिलाओं के पक्षधर डॉ. अंबेडकर" विषय पर अपना शोध आलेख प्रस्तुत किया/व्याख्यान दिया/अध्यक्षता की।

डॉ.निवेदिता वर्मा
सह-समन्वयक
विक्रम विश्वविद्यालय,उज्जैन

आचार्य शैलेन्द्र पाराशर
समन्वयक
विक्रम विश्वविद्यालय,उज्जैन

Scanned with CamScanner

Lok Sewa Shikshan Bahuuddeshiya Mandal's

PADM. DR. V. B. KOLTE COLLEGE OF ENGINEERING & POLYTECHNIC, MALKAPUR

Dist-Buldhana, State-Maharashtra, India 443101
Ph No. (07267) 226700, 224943
Email - coemalkapur@rediffmail.com, Website - www.coemalkapur.ac.in

(Approved by AICTE-New Delhi, Government of Maharashtra, DTE, MSBTE, Mumbai & Affiliated to S.G.B. Amravati University)

International Conference on "Recent Trends & Research in Engineering & Science"

ICRTRES

Certificate

092

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Ms./Miss Jyoti Maiwal of Vikram University Ujjain participated/ presented Waste Material Management in International Conference & Secured position —.

Organized by Padm. Dr. V. B. Kolte College of Engineering Malkapur held on 01/04/2017

Conference Co-convener

(DR. A. W. KHARCHE)
Principal
Conference Convener
Padm.Dr.V.B.Kolte College of Engineering

Scanned with CamScanner

NAAC द्वारा B ग्रेड से अधिमान्य एवं UGC से 2(f) 12(B) की सम्बद्धता

महाराजा महाविद्यालय

देवास रोड, उज्जैन (म.प्र.)

एन.सी.टी.ई. से मान्यता एवं विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से स्थायी सम्बद्धता प्राप्त

राष्ट्रीय संविमर्श

डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, नई दिल्ली के सौजन्य से

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती डॉ. ज्योति मेवाल

पद नाम प्राचार्या संस्था प्रशांति कॉलेज आफ प्रोफ. स्टडीज ने महाराजा महाविद्यालय उज्जैन द्वारा आयोजित ''डॉ. भीमराव अम्बेडकर के स्त्री-शिक्षा संबंधी विचारों की प्रासंगिकता'' विषय पर दिनांक 30 जनवरी 2017 को राष्ट्रीय संविमर्श में सहभागिता की।

शोध-पत्र का विषय नारी विमर्श : आधुनिक सामाजिक एवं शैक्षिक चिंतन

अध्यक्ष राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना, उज्जैन	कार्यकारी निदेशक महाराजा महाविद्यालय, उज्जैन	प्राचार्य महाराजा महाविद्यालय, उज्जैन

Scanned with CamScanner

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

त्रिवेणी कला एवं पुरातत्व संग्रहालय एवं
अक्षर वार्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका का प्रतिष्ठा आयोजन

28 फरवरी 2018, बुधवार

स्थान : त्रिवेणी संग्रहालय, रुद्रसागर, जयसिंहपुरा, उज्जैन - 456 006

त्रिवेणी
कलाकार का संग्रहालय

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका

विषय

स्त्री विमर्श : परम्परा और नवीन आयाम

Discourse on Woman : Tradition and New Dimensions

प्रमाण पत्र क्र. 258

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री/डॉ ज्योति गौवाल

संस्था प्रज्ञाविहार शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन

ने अक्षर वार्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका और त्रिवेणी कला एवं पुरातत्व संग्रहालय, उज्जैन (म.प्र. संस्कृति परिषद, संस्कृति विभाग, भोपाल) द्वारा दिनांक 28 फरवरी, 2018 को आयोजित स्त्री विमर्श : परम्परा और नवीन आयाम पर केन्द्रित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता की।

इन्होंने स्त्री विमर्श : "आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महिला अधिकार और भागीदारी"

विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया / व्याख्यान दिया / सत्र की अध्यक्षता की।

प्रो. नीलेन्द्रकुमार शर्मा	डॉ. मोहन बैरागी	अवधेश श्रीवास्तव
प्रधान सम्पादक अक्षर वार्ता	सम्पादक अक्षर वार्ता	प्रभारी अधिकारी
आचार्य एवं कुलानुशासक	अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका	त्रिवेणी कला एवं पुरातत्व संग्रहालय
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, म.प्र.	उज्जैन, म.प्र.	उज्जैन, म.प्र.

कार्यालय : 43, कबीरसागर, द्रविड़ मार्ग, उज्जैन, म.प्र. भारत 456 006, फोन : 0734-2550150
office : 43, Kabir Sagar, Dravid Marg, Ujjain, M.P. India 456 006, Phone : 0734-2550150
Website : www.aksharwarta.com, gmail : aksharwartajournal@gmail.com

Scanned with CamScanner

ICSSR/UGC Sponsored
NATIONAL SEMINAR

on

Transforming India 2030 :
A Roadmap for
Sustainable
Development Goals

February 22-23, 2019

Organized by :

Department of Economics
Faculty of Arts, Edu. & Social Sc.
Jai Narain Vyas University,
Jodhpur (Raj.)
INDIA

ICSSR

UGC

Certificate

This is to Certify that Prof./Dr./Mr./Ms. Jyoti Maiwal

Department of ..... University / College / Institute Prashanti College of Professional Study has participated in the National Seminar on Transforming India 2030 : A Roadmap for Sustainable Development Goals on 22nd - 23rd February, 2019 as a Keynote Speaker / Session Chair / Co-Chair / Invited Speaker / Participant. He/She has also presented a paper entitled उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन

Dr. Dev Karan
Convener
National Seminar

Dr. Madan Mohan
Head
Department of Economics

Scanned with CamScanner

दैनिक भास्कर

नगर पालिक निगम, उज्जैन

RUN FOR SWACHHATA

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

श्री/श्रीमती/संस्थान डॉ. ज्योति मेवास, प्रशांति शिक्षा महाविद्यालय

ने उज्जैन शहर को स्वच्छता सर्वेक्षण में नंबर 1 बनाने के उद्देश्य से जनजागृति हेतु
दैनिक भास्कर एवं नगर पालिक निगम, उज्जैन के संयुक्त आयोजन

" रन फॉर स्वच्छता "

में सहभागिता की तथा उत्कृष्ट स्थान प्राप्त किया।
दैनिक भास्कर परिवार आपके उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

DIVINE

राजेश माली
कार्यकारी संपादक-उज्जैन

अंकुर बिल्लौरे
यूनिट हेड-उज्जैन

दैनिक भास्कर दिव्य भास्कर दिल्ली मराठी DB POST DB DIGITAL homeonline.com

India's Largest Newspaper Group | 12 States | 67 Editions | 4 Languages

Scanned with CamScanner

The Bhopal School of Social Sciences

Affiliated to Barkatullah University, Bhopal
Promoted by the Catholic Archdiocese of Bhopal
NAAC Re-accredited Autonomous College under the UGC Scheme with 'A' Grade (CGPA 3.27)

National Seminar on Best Practices in Higher Education Institutions & Strategies Adopted for Quality Assurance

18 and 19 October, 2019

In Academic Collaboration with National Accreditation and Assessment Council (NAAC)
Sponsored by

University Grants Commission (UGC)
(Under Autonomous Grant)

Organised by: Internal Quality Assurance Cell (IQAC)

Certificate of Appreciation

This is to Certify that Prof/Dr/Mr/Ms ज्योति मैवाल

from प्रशांती कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडी, उज्जैन *has participated/presented paper entitled*

विद्यालयीन वातावरण में शैक्षिक गतिविधियों के आयोजन में शिक्षक की भूमिका

Dr Fr John R J Patron & Principal	Dr Sheeba Joseph Convener & Co-ordinator IQAC	Dr Smitha Pillai Organizing Secretary	Ms Sheena Thomas Organizing Secretary

Scanned with CamScanner

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

RKDF UNIVERSITY, BHOPAL

Webinar on "Being Secure in the Digital Word"

30th September, 2021

Renowned Expert/Speaker

Dr. Varun Kapoor, IPS

Addl. Director General of Police M.P.

This is to Certify that Mr./Ms./Dr.: Dr Jyoti maiwal

Organisation/ Institute: Prashanti college of Professional Studies Ujjain

Participated in webinar on above topic organized by RKDF University, Bhopal (M.P.) India held on 30th September, 2021.

Dr. Sharad Gangele Convener Principal, Bhabha College of Engineering RKDF University, Bhopal M.P.	Dr. B.N. Singh Director Management RKDF University, Bhopal M.P.	Prof. (Dr). Sudesh Kumar Sohani Vice Chancellor RKDF University, Bhopal M.P.

Scanned with CamScanner

Azadi Ka Amrit Mahotsav

Ministry of Ayush
Government of India

Registration No:
SYNP-346719

FIT INDIA

Co-sponsored by

Certificate of Participation

To

Dr. Jyoti Maiwal

of

PRASHANTI COLLEGE OF PROFESSIONAL STUDIES, UJJAIN

for Successful participation in mass

"SURYA NAMASKAR"

Demonstration programme with more than 75 Lakh People on Makar Sankranti,

14TH JANUARY, 2022

Dr. Ishwar V. Basavaraddi
Head of Institution, YCB, &
Director, Morarji Desai National Institute of Yoga
Ministry of Ayush, Government of India
New Delhi

Issuing Date: 14-01-2022

Scanned with CamScanner

MAH/MUL/03
ISSN-23

विद्यावार्ता

Issue-37, Vol-12, Jan. To March 2021

International Peer Reviewed Referred Research Journal

Editor
Dr. Bapu

Scanned with CamScanner

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Jan. To March 2021
Issue 37, Vol-12

Date of Publication
01 March 2021

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with CamScanner

New Delhi: Kanishka Pubkishers, 8.3Kalinak,K. (1992). Settling the Score. University of Wiscon sin Press, 24.

4. Sinha, K. (n.d.). Patkatha lekhan ke tatva,171.

5. Pandey, S. G. (1966). Sahityakar Ki Aastha Tatha Anya Nibandh. Allahabad: Lokbharti Prakashan,119

6. Eisler, T. A. (1947). Composing for the films . New York: Oxford University Press, 59.

7. Smith, S. C. (2002).
A Heart at Fire's Center: The Life and Music of Bernard Herrmann.
London: University of California Press,122.

8. Ranchan, V. (2013). Story of a Bollywood Songs. Abhinav Publication, 89.

9. DK Illustrated Oxford Dictionary, Dorling Kindersley Limited and Oxford University Press, 2011

10. Kalinak,K. (1992). Settling the Score. University of Wisconsin Press,9.

11. Wingstedt, J. (2005). Narrative Music: Towards and Understanding of Musical Narrative Functions in Multimedia, (Licentiate thesis). School of Music, Luleå University of Technology, Sweden, 17.

12. Sasidharan, T. (2009). Hindi Film aur Filmi Geet - Udbhav aur Vikas : Vishayvastu. Kannur : Kannur University.

13. "Music in the Cinema," New York Times, 29 September 1935,4.

□□□

08

Mysticism

Dr. Jyoti Maiwal
Principal,
Prashanti College of Professional Studies
Ujjain (M.P.)

Shirly Singh
Research Scholar
Ujjain (M.P.)

****

Mysticism, the practice of religious ecstasies (religious experiences during alternate states of consciousness), together with whatever ideologies, ethics, rites, myths, legends, and magic may be related to them. Mysticism is the heart of every minor and major religion. The experience affirms to the religious that the beyond is not Nothingness but there is a spiritual reality, which has created and now controls the universe. The longing for God give arise to such an experience when the seeker comes face to face with the ultimate reality. There is no subject more enduringly provocative than mysticism. To ignore mystics or mystic experience is not only a prejudice or a still born child of the rationalist but missing a tour in heaven.

It is a kind of knowledge, which brings a kind of power. This knowledge sharpens the psychic faculties and eyes wrapped with a piece of cloth, a magician can drive cycle in a crowded street, where in mysticism the mind is yoked to a motion less object real or imaginary. The senses are withdrawn, the mind is turned inward, the driving force is longing for God. It is flight of the finite to take rest into the bosom of the infinite. The difference between magic and mysticism is that in the former case a person acquires a knowledge by which he can claim to

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

March, 2021, Issue-74, Vol-03

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Type Educational & Reference Book Publisher & Distributor / www.vidyawarta.com

Scanned with CamScanner

schooling, the individual or the student enter into higher educational system. The education at university level helps to improve the individual's skills and their knowledge and also extend the level of expressing their thoughts and feelings. At the university level, learning decided from the performance. Generally learning is going to be faster when there is a condition of rewards and punishments taken place immediately. It expresses as a change in behaviour followed by practice. Drives are a very important part of the learning and provide the energy that makes the learning possible and easy. Drives give the proper directions to the individual behaviour.

In shaping personality of the students, the biological drives as well as personal and social drive plays a fundamental role. Hunger, thirst, avoidance, comfort seeking, sex and elimination are some biological drives.

Exploration, activity, curiosity and dependency requirement are also the types of personal and social drive. These drives increase the strength and likelihood of an individual which he has inside.

The behaviour of the students changes by these different drives or motives. When the individual have a high level of motivation, he will do a lot of practice and strife to achieve his goal. Obviously his behaviour changes according to his goal.

Drive gives the strength and power to behaviour of a student and makes their personality powerful or according to the work of the student. Drives give the direction to the student's behaviour to achieve their goal. To perform them well in each and every condition.

References

1. Boyd R. McCandless - Adolescence behaviour and development
2. J.W.B. P Sinha - Development through Behaviour modification
3. R. S. Woodworth - Dynamics of Behaviour
4. E. Earl Baughman and George Schlange Welsh - Personality: A Behavioural science
5. MICHAEL ARGYLE - The Scientific Study of Social Behaviour

02

GROUP DYNAMICS- GROUP PROCESS

Dr. Jyoti Mishra
Principal
Pratibhati College of Professional Studies
Ujjain (M.P.)

Shalu Singh
Research Scholar
Ujjain (M.P.)

GROUP

A collection of individuals forms a group whether there is interaction of the members or not. Without interaction the group is merely a aggregation. Functional groups are characterized by common goals and mutual stimulation and reciprocal among members, which serve as means for satisfying individual needs, and in which individuals enter into reciprocal relations with other group members, identify themselves with the group and are changed through mutual bonding in the group.

TYPES

Primary and Secondary Groups

1. Groups characterized by more or less continued intimate face to face association and cooperation are Primary Groups, e.g. family, children's play groups, adolescent group, neighbourhood group.

2. Secondary Groups are opposite primary groups, such as national, political, religious, educational and professional groups. They don't depend upon face to face contact although there may be direct interaction among the members.

3. Social and Psychic Groups: In social groups the purpose is largely impersonal, the members associating together to work for some common objective or problem. Labor union, self-

Scanned with CamScanner

INNOVARE ACADEMIC SCIENCES

Vol 2 Issue 2, 2014

ISSN: 2347-5528

Review Article

ROLE OF AN IMPORTANCE OF ACTIVITIES IN SCHOOL ENVIRONMENT

ANIL BABU*, ANJJYOTI MAIWAL[2]

*Lecturer, Saraswati Shiksha Mahavidhyalay, Mandsaur, District: Mandsaur, 458001, Madhya Pradesh, India. [2]Principal, Prashanti College of Professional Studies, Ujjain, Madhya Pradesh, India. Email: anil@ccs-ujjain@gmail.com

Received 21 August 2014, Revised and Accepted 10 September 2014

ABSTRACT

This study is an attempt to show see the important of learning activities. For active learning activities the environment should be prepared here with help and [illegible] that should be interesting in learning. The school teachers are conducting any activities it should be according to students interest, capacity and mental ability. Activities should based on the theory of learning by doing. The students are more than more things. There are many towards activities have been performing in this activity. It does not mean that we always get a hundred percent results of activities sometimes unexpected of activities provide opportunities to discover things.

Keywords: Active Learning Activities In School Environment

INTRODUCTION

How important are activities in student life that we can understand ourselves. In reality, various activities should be taken place between students and teachers in the school environment to make their life strong and creative. Teachers should provide students numerous opportunities of learning by doing because learning is a natural process and it helps to grow very fast with the help of their interests and experiences. If students come in contact with anything then the process of learning move ahead because the mode of thinking and creativity are hidden in the mind and heart of students.

Creative Activity

For Example: Firstly This Activity Was Developed In China And In 19th Century This Puzzle Had Become Very Popular In Europe It Has Seven Wooden Pieces Outside A Square These Pieces Are Cutting Each Other But They Can Be Kept Together In The Form Of Image To Keep Them As An Image Is A Creative Work Drawn Image The Various things and Activities Around Us

In this way we find an excellent enjoyment in an entire process of teaching and learning where students get their place in the field of learning according to their interests. Here the processes of their thinking and experiences also become important to make the learning interesting activities should be prepared in advance so learning becomes effective without using any activity learning would be useless.

Science Experiment Activity

Let us consider an example of balloons. Take two balloons. Fill first balloon with hydrogen gas and second balloon with helium.

1

2

We will see that a balloon of hydrogen will fly towards sky but a balloon of helium will remain in earth. This is because hydrogen is lighter than helium. From this activity students get knowledge about gases their nature and very what does activity mean that we can realize by attaching ourselves with it only something like this realization of hydrogen comes only in the garden the main benefit of activity is that it provides opportunity to students to think on their own experience which is essential for learning.

Classroom Learning Activity

The activity which is being performed in a school campus needs participation of all especially teacher and taught both by performing activities many things can be learnt by many people. For example students can get knowledge about colours and they can know how to add and subtract by using these balls.

Activities make the environment of class easy and students begin to see learning by doing and learning by [illegible] activities.

Scanned with CamScanner

SHODHASAMHITA
शोधसंहिता

ISSN 2277-7067
UGC CARE Group I

प्रतिभाशाली बालकों तथा सामान्य बालकों में अंग्रेजी भाषा के प्रति उनकी रूचि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. अन्तिम बाला पाण्डेय
प्रशान्ति शिक्षा महाविद्यालय उज्जैन

डॉ. ज्योति मेवाल
प्रशान्ति शिक्षा महाविद्यालय उज्जैन

सारांश – सामान्य रूप से सभी बालक समान होते है, किन्तु जब उन पर मनोवेज्ञानिक परिक्षण डाला जाए तो उनमें से कुछ अच्छी बुद्धि व कुछ औसत बुद्धि वाले बालक होते है। बुद्धिलब्धि के मापन के अंतर्गत बालकों की श्रेणी का निर्माण किया जाता है। मनुष्य अन्य प्राणियों से अधिक संवेदनशील और बुद्धिमान प्राणी है। अपने आप को अभिव्यक्त करना उसकी प्रवृत्ति है। समाज में अन्य व्यक्तियों के साथ अपने विचारो को आदान प्रदान करने के लिए उसे किसी न किसी भाषा का होना जरूरी है। ये भाषा किसी न किसी राष्ट्र की होती है। इस शोध को करने का उद्देश्य प्रतिभाशाली बालक तथा सामान्य बालकों को अंग्रेजी भाषा में रूचि तथा अंग्रेजी भाषा के महत्व को जानने की कोशिश की गई है। दोनो प्रकार के बालक अंग्रेजी को पढ़ने में क्या योग्यता रखते है। शोध के उद्देश्य के रूप में सामान्य बालकों व प्रतिभाशाली बालकों को अंग्रेजी भाषा सीखने के प्रति रूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता। परिसीमन में उज्जैन के प्रतिभाशाली व सामान्य बालक जिनकी उम्र १०-१२ वर्ष है निष्कर्ष के रूप में उनमे कोई सार्थक अंतर नही पाया जाता है।

प्रस्तावना – भाषा विचार की पोषक है भाषा को वैचारिक आदान प्रदान का माध्यम कहा जाता है। भाषा को अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम माना जाता है। यही नहीं हमारे समाज के निर्माण विकास अस्मिता समाजिक व सांस्कृतिक पहचान का भी महत्वपूर्ण साधन है। अंग्रेजी भाषा जनसंख्या की दृष्टि से विश्व की प्रमुख भाषा तथा महत्व के आधार पर राष्ट्र इससे अछूता नहीं है। अंग्रेजी भाषा दुनिया की महान शक्तियों के साथ कई राष्ट्र की मुख्य भाषा है तथा बहुत से राज्यों की वित्तीय प्रमुख भाषा है तथा यह विज्ञान की तकनीकी प्रचार-प्रसार की भी भाषा है विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों को संयुक्त राष्ट्र महासंघ विश्व स्वास्थ्य संगठन विश्व व्यापार आदि की भाषा भी माना जाता है। अतः इस भाषा के प्रति विद्यार्थियों की रूचि का होना अति आवश्यक है।

उद्देश्य –

- सामान्य व प्रतिभाशाली बालकों का अंग्रेजी भाषा के प्रति रूचि का अध्ययन।
- सामान्य व प्रतिभाशाली बालकों का अंग्रेजी भाषा के माध्यम में अध्ययन के प्रति रूचि का अध्ययन।

Scanned with CamScanner

SHODHASAMHITA
शोधसंहिता
ISSN No. 2277-7067

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that

डॉ. ज्योति गेवाल
सहायक शिक्षा महाविद्यालय इन्दौर

For the paper entitled

प्रतिभाशाली बालकों तथा सामान्य बालकों में अंग्रेजी भाषा के प्रति अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन

Vol. No. IX, Issue- 5 (II) January – June 2022

In

Shodhsamhita

Impact Factor: 4.95
UGC Care Group 1 Journal

Chief

Scanned with CamScanner

RNI UPBIL/2008/28046
ISSN No.: 0976-3406

10 (1)
Sept., 2017

Jyati Malay
P. Pallavi

Shikshamitra

शिक्षामित्र

Scanned with CamScanner

SHIKSHAMITRA (ISSN : 0976-3406) 2017, 10 (1) Pages : 25-27

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्यपरकता की आवश्यकता

ज्योति मैवाल[1] एवं पल्लवी मैवाल[2]

आज का छात्र भारत की प्राचीन संस्कृति तथा मूल्यों में अपनी आस्था खोता चला जा रहा है। अधीर, उग्र व स्वच्छन्दता में विश्वास रखने वाले विद्यार्थी का ध्यान साधन व साध्यों की ओर से हट गया है। देश की भावी प्रगति व सुसंगठित व स्वस्थ भावी समाज की स्थापना का गुरुतर दायित्व देश के भावी नागरिकों को ही निभाना है। मूल्य विमुख समाज त्याज्य है तथा हमें आज के युग में लुप्त हो रहे सत्य, अहिंसा, दया, प्रेम, परोपकार, धैर्य सहानुभूति, अभय, दान, साहस, क्षमा, आदि मानवीय मूल्यों के विकास को सुनिश्चित करना है। जब हम मूल्यपरक शिक्षा की बात करते हैं तब हमारी मंशा यह रहती है कि शिक्षा के क्षेत्र में समुचित मूल्यों, दृष्टिकोणों, भावनाओं व व्यवहार मानकों को सुव्यवस्थित रूप से विकसित किया जाय। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी शिक्षा द्वारा मानव मूल्यों को विकसित करने की बात पर बल दिया गया है। अब प्रश्न उठता है शिक्षा द्वारा किन मूल्यों को विकसित किया जाय? हमें उन मूल्यों का निर्माण करने की कोशिशें करनी होगीं जो सभी भारतवासियों को मान्य हों। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया है–हमारे बहुवर्गीय समाज में शिक्षा को सर्वव्यापी और भागवत मूल्यों को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि भारतीय जन में राष्ट्रीय एकता की भावना बड़े और संकीर्ण सम्प्रदायवाद, धार्मिक हिंसा, अन्ध-विश्वास व भाग्यवाद को समाप्त किया जा सके।

भारतीय शिक्षा का इतिहास सतत् समृद्ध रहा है। जिसका मूल शिक्षा को मानवीय मूल्यों, व्यवहारों, मूल्यांकनों एवं परिणामों के आधार पर चिंतकों शिक्षाविदों द्वारा पुख्ता एवं सम्बल दिया जाता था। जिन्होंने मानव जगत को सत्य और अहिंसा, जियो और जीने दो, वसुधैव कुटुम्बकम जैसे उच्च मानक प्रदान किए। काल के प्रवाह में भौतिक विकास, स्वार्थ, कुटिलतावश हमारे मार्गदर्शकों ने इन मूल्यों का शोषण कर अपने हितार्थ एवं प्रभाव से स्वयं के मूल्य एवं मानक निर्धारित कर देश को जर्जर हालात पर लाकर खड़ा कर दिया चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, सामाजिक सरोकार का क्षेत्र हो या राजनैतिक नेतृत्व का। हम हर क्षेत्र में अपने भारतीय मूल्यों एवं मानकों को पलीथा लगाकर विदेशी आयत मूल्यों का शिक्षण जैसे संवदेनशील क्षेत्र में उन्हें अखतियार कर रहे हैं। परिणामस्वरूप यह कि शिक्षा क्षेत्र से मूल्य केन्द्रित शिक्षा को वनवास दे दिया गया है जिसके गंभीर परिणाम देश को बर्दाशत करने पढ़ रहे हैं वह है स्वयं का विनाश। देश के पतन पर ठहरकर चिंतन करें उसमें स्वयं के लिए क्या कृत्य श्रेष्ठ है? उस पर प्राथमिकता के आधार पर अमूल करें तो यह चिंतन, यह सोच ही मूल्यों का चिंतन है जो कि हमें शिक्षा जगत का अध्येता होने के नाते हमें मानव होने की संज्ञा प्रदान करती है। बिना मूल्य शिक्षा के हमारे पास, राष्ट्र के पास भटकाव एवं गुलामी की मानसिकता के अलावा हमारा अपना कुछ न होकर शेष भी धूमिल होकर मिट जाऐगा।

आज हम मूल्यों पर इतना ढिंढोरा पीट रहे हैं यह है क्या? इनकी आवश्यकता क्यों? यदि यह मानव जीवन के अपरिहार्य है तो इन्हें कैसे आमजन को सिखाया जा सकता है। इन प्रश्नों के ठोस एवं आलाजवाब मिलने के पश्चात् ही मूल्य केन्द्रित समाज एवं राष्ट्र के निर्माण को पुख्ता किया जा सकता है।

1. प्राचार्या, प्रशांति कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, उज्जैन (म. प्र.)
2. एम. आई. जी. अलखनन्दा नगर, उज्जैन (म. प्र.)

Scanned with CamScanner

SHODHASAMHITA
शोधसंहिता

ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

प्रतिभाशाली बालकों तथा सामान्य बालकों में अंग्रेजी भाषा के प्रति उनकी रूचि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. अन्तिम बाला पाण्डेय
प्रशान्ति शिक्षा महाविद्यालय उज्जैन

डॉ. ज्योति मेवाल
प्रशान्ति शिक्षा महाविद्यालय उज्जैन

सारांश - सामान्य रूप से सभी बालक समान होते है, किन्तु जब उन पर मनोवैज्ञानिक परिक्षण डाला जाए तो उनमें से कुछ अच्छी बुद्धि व कुछ औसत बुद्धि वाले बालक होते है। बुद्धिलब्धि के मापन के अंतर्गत बालकों की श्रेणी का निर्माण किया जाता है। मनुष्य अन्य प्राणियों से अधिक संवेदनशील और बुद्धिमान प्राणी है। अपने आप को अभिव्यक्त करना उसकी प्रवृत्ति है। समाज में अन्य व्यक्तियों के साथ अपने विचारो को आदान प्रदान करने के लिए उसे किसी न किसी भाषा का होना जरूरी है। ये भाषा किसी न किसी राष्ट्र की होती है। इस शोध को करने का उद्देश्य प्रतिभाशाली बालक तथा सामान्य बालकों को अंग्रेजी भाषा में रूचि तथा अंग्रेजी भाषा के महत्व को जानने की कोशिश की गई है। दोनो प्रकार के बालक अंग्रेजी को पढ़ने में क्या योग्यता रखते है। शोध के उद्देश्य के रूप में सामान्य बालकों व प्रतिभाशाली बालकों को अंग्रेजी भाषा सीखने के प्रति रूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता। परिसीमन में उज्जैन के प्रतिभाशाली व सामान्य बालक जिनकी उम्र १०-१२ वर्ष है निष्कर्ष के रूप में उनमे कोई सार्थक अंतर नही पाया जाता है।

प्रस्तावना - भाषा विचार की पोषक है भाषा को वैचारिक आदान प्रदान का माध्यम कहा जाता है। भाषा को अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम माना जाता है। यही नहीं हमारे समाज के निर्माण विकास अस्मिता समाजिक व सांस्कृतिक पहचान का भी महत्वपूर्ण साधन है। अंग्रेजी भाषा जनसंख्या की दृष्टि से विश्व की प्रमुख भाषा तथा महत्व के आधार पर राष्ट्र इससे अछूता नहीं है। अंग्रेजी भाषा दुनिया की महान शक्तियों के साथ कई राष्ट्र की मुख्य भाषा है तथा बहुत से राज्यों की वित्तीय प्रमुख भाषा है तथा यह विज्ञान की तकनीकी प्रचार-प्रसार की भी भाषा है विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों को संयुक्त राष्ट्र महासंघ विश्व स्वास्थ्य संगठन विश्व व्यापार आदि की भाषा भी माना जाता है। अतः इस भाषा के प्रति विद्यार्थियों की रूचि का होना अति आवश्यक है।

उद्देश्य -

- सामान्य व प्रतिभाशाली बालकों का अंग्रेजी भाषा के प्रति रूचि का अध्ययन।
- सामान्य व प्रतिभाशाली बालकों का अंग्रेजी भाषा के माध्यम में अध्ययन के प्रति रूचि का अध्ययन।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

[illegible]

ISBN : 978-93-82937-09-8

यू.जी.सी. मध्य क्षेत्र भोपाल के वित्तीय सहयोग से संचालित कार्यशाला में प्रस्तुत विचारों का संकलन

सम्पादक मण्डल
डॉ. हेमन्त नामदेव, डॉ. विनीता अवस्थी
डॉ. वी. बी. श्रीवास्तव, डॉ. रवि मिश्रा
डॉ. आर. एस. गौरसिया, डॉ. जफर महमूद

© सम्पादिका

प्रथम संस्करण : 2014

मूल्य : ₹ 900/- मात्र

शब्द सज्जा :
श्री हरी ग्राफिक्स

मुद्रक :
अनुराधा प्रिन्टर्स, कानपुर

प्रकाशक :
निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
3/, 'शिवराम कृपा' विष्णु कालोनी शाहगंज, आगरा
मो. : 9458009531-38
e-mail : nikhilbooks.786@gmail.com
visit us : www.nikhilbooks.com

Scanned with CamScanner

Volume - 4 June 2016 ISSN : 2321-9920

APOLLO JOURNAL OF Educational Research

A Refereed & Peer Reviewed Journal

APOLLO COLLEGE

DURG

APOLLO COLLEGE

NAAC Accredited "B" Grade

Affiliated to Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur

Scanned with CamScanner

AJER, Durg (ISSN : 2321–9920)
June, 2016, Vol. (4) : 70-72
© Apollo Journal of Educational Research

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के मूल्यांकन में निर्देशन एवं परामर्शन सेवा की आवश्यकता

डॉ. ज्योति मैवाल[1] एवं अनिल बाबू[2]

सारांश

निर्देशन एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें अधिक अनुभवी एवं जानकार व्यक्ति शिक्षार्थियों की समस्याओं के समायोजन हेतु मदद करता है। आधुनिक युग इतना बहुआयामी विकास समेटे हुए है कि इसको परिभाषित करना कठिन हो गया है। कभी इसे विज्ञान एवं तकनीकी युग तो कभी आन्तरिक युग या सूचना क्रांति का युग कहते हैं। इस आधुनिक युग में जीवन के सभी क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन देखा जा सकता है। शिक्षा व्यवस्था भी इससे अछूती नहीं रही है। आज आधुनिक शिक्षा प्रक्रिया के स्वरूप में भी परिवर्तन आया है। अनेक प्रकार के नये-नये प्रोफेशनल पाठ्यक्रमों का प्रचलन तेजी से बढ़ा है जिससे आज शिक्षार्थियों के सामने अनेक प्रकार की नयी-नयी कठिनाइयाँ उभर कर सामने आयी हैं। आज तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रगति ने शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन किये हैं। परम्परागत शिक्षा के स्थान पर तकनीकी शिक्षा के प्रचलन में वृद्धि हुई है। आज कम्प्यूटर, इंटरनेट, ई-लर्निंग, ई-बुक, सक्रिय अधिगम प्रविधि, ऑन लाइन लेक्चर के क्षेत्र में प्रगति हुई है। निर्देशन एवं परामर्शन प्रक्रिया के माध्यम से आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में हम वह लौ जगा सकते हैं, जहाँ ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी एवं सायबर युग के साथ कदम मिलाकर शिक्षार्थियों में मल्टी डायमेनशनल पर्सनलिटी डेवलप कर उन्हें आधुनिक शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ सकते हैं।

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के उत्कृष्ट मूल्यांकन में निर्देशन एवं परमर्शन सेवा की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वास्तव में देखा जाये तो मूल्यांकन किसी भी शैक्षिक प्रक्रिया का अभिन्न अंग माना जाता है। मूल्यांकन के माध्यम से हम शिक्षार्थी, शिक्षक एवं शिक्षा व्यवस्था की उपलब्धियों का आकलन कर सकते हैं। मूल्यांकन प्रक्रिया के माध्यम से हमें ज्ञात होता है कि शिक्षार्थियों ने सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया पर अपनी समझ बनायी है या नहीं। आज आधुनिकीकरण के दौर में शिक्षा प्रणाली में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं, जिस कारण शिक्षार्थी को प्रत्येक मोड़ पर विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। प्राचीन काल में विद्यार्थी जीवन सरल था जिससे वे अपना शैक्षिक जीवन सौहार्द्रपूर्ण ढंग से व्यतीत करते थे। यह सच है कि समस्याएँ निर्देशन को जन्म देती हैं। शिक्षार्थी जितनी अधिक समस्याओं से घिरा रहेगा, उसे उतनी ही अधिक निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता का अनुभव होगा। निर्देशन एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। इसमें एक व्यक्ति जो अधिक अनुभवी एवं जानकार (परामर्शदाता) के द्वारा इस प्रकार की सहायता प्रदान की जाती है कि वह विद्यार्थियों की सभी तरह की अन्तर्निहित शक्तियों, क्षमताओं, योग्यताओं, अभिरुचियों तथा मानसिक स्तर को समझकर विद्यार्थियों की विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान करने में मदद करता है। आज आधुनिक

1. प्राचार्या, प्रशान्ति कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्ट्डी, उज्जैन (म.प्र.)
2. असिस्टेंट प्रोफेसर, सरस्वती शिक्षा महाविद्यालय, मंदसौर (म.प्र.)

Scanned with CamScanner

6th

International Conference

of

Indian Psychometrics & Educational Research Association

(IPERA, INDIA)

24-25-26 September, 2016

Organized by and at

Harprasad Institute of Behavioural Studies (HIBS)

41-42, Hardeep Enclave, Sikandra,

Agra-282 007

on

Evaluation of Modern Educational System

Recipient of Award

Dr. Jyoti Vivek Mewal

Scanned with CamScanner

HIBS

IPERA

8th International Conference

of

Indian Psychometrics & Educational Research Association (IPERA), PATNA

24-25-26 September, 2016

Organized by and at

Harprasad Institute of Behavioural Studies (HIBS)

41-42, Hardeep Enclave, Sikandra, Agra-282 007

on

Evaluation of Modern Educational System

Recipient of Award

Dr. Jyoti Vivek Mewal

Scanned with CamScanner

CERTIFICATE

8th INTERNATIONAL CONFERENCE

OF

INDIAN PSYCHOMETRICS AND EDUCATIONAL RESEARCH ASSOCIATION (IPERA), PATNA

ON

EVALUATION OF MODERN EDUCATIONAL SYSTEM

24-26 Sept., 2016

at

HARPRASAD INSTITUTE OF BEHAVIOURAL STUDIES (HIBS) AGRA.

This is to certify that Dr./Mr./Mrs डॉ. ज्योति मेवाल (प्राचार्या)

प्रशासित कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, उज्जैन (म.प्र.) has participated

and also presented the paper entitled "आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के मूल्यांकन में निर्देशन एवं परामर्शन सेवा की आवश्यकता"

Authorized Signatory
HIBS

26th September, 2016

Authorized Signatory
IPERA

Scanned with CamScanner

साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ० घनश्याम भारती

डॉ० ओकेन्द्र

Scanned with CamScanner

१४. स्वामी विवेकानन्द और राष्ट्रवाद ११३
प्रो. समिक्षा सोनी, डॉ० रूपाली दिसावल
१५. गुमनाम नायिकाओं की स्वाधीनता आंदोलन में भूमिका ११६
डॉ० विशाखा मसूरकर
१६. हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय भावना १२७
डॉ० अनीता अग्रवाल
१७. हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना १३३
श्रीमती राजकिशोरी मिंज
१८. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गांधीजी की देन :
एक अध्ययन १३८
प्रा. डॉ० जितेश नारायण चौहाण
१९. धार्मिक राजनीति का जनसमुदाय पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव १४९
डॉ० सुनिल एल. त्रिभुवन
२०. राष्ट्रवाद पर स्वामी दयानन्द सरस्वती का चिंतन १५५
दहातों डेसोपान भानुदास
२१. हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता १६२
संजय साह
२२. अलका सरावगी के 'कलि-कथा वाया बाइपास' उपन्यास
में राष्ट्रीय चेतना का अनुशीलन १७२
कविता कोठारी
२३. सरदार वल्लभभाई पटेल और राष्ट्रीय एकता १८२
एन. हरि प्रसाद, डॉ० डी. सहदेवुडू
२४. तिरंगा के खातिर शहीद होने वाली वीरांगना कनकलता बरूआ १८८
किरण कलिता
२५. भारतीय अर्थव्यवस्था में सतत विकास १९२
देवकृपि भलावी
२६. Subhash Chandra, a gem of Indian freedom
Movement २००
Ramen Goswami
२७. मध्यकालीन हिंदी भक्ति साहित्य में राष्ट्रीय बोध २०७
डॉ० अनिल कुमार
२८. रामधारी सिंह दिनकर के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना २२६

Scanned with CamScanner

स्वामी विवेकानन्द और राष्ट्रवाद

प्रो.समिक्षा सोनी

डॉ.रूपाली दिसावल
प्रशांति कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, उज्जैन

प्रस्तावना :

भारतवर्ष आदिकाल से महापुरूषों की जन्मभूमि माना गया है। इन सभी महान आत्माओं ने सांस्कृति विरासत को अपनी आध्यात्मिक विचाराधाओं से विकसित किया। इन सभी ने धर्म प्रचार के कार्य के साथ-साथ शिक्षा समस्याओं के समाधान हेतु भी अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किये हैं। स्वामी विवेकानन्द जी भी वह महान विभूति थे जिन्होंने वेदान्त सिद्धान्त तथा व्यावहारिक वेदान्त को लोक जीवन का संबल बनाया और समन्वयवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए वह सर्वसाधारण की शिक्षा तथा स्त्री-शिक्षा को बल देते थे और शिक्षा द्वारा समाज को नई दिशा देना चाहते थे।

स्वामी विवेकानन्द का जीवन परिचय :

स्वामी विवेकानन्द के पूर्वजों का आदि निवास वर्द्धमान (पश्चिमी बंगाल) जिले के कालना महकमे के अन्तर्गत डेरेटोना गाँव में था। ब्रिटिश शासनकाल में वह लोग गाँव छोड़कर कलकत्ता आ बसे। उनमें गहन गम्भीर चिन्तन शक्ति जाग्रत हुई और संन्यास के प्रति आकर्षण बढ़ता गया परन्तु वह जगत के प्रति निष्ठुर नहीं हुए। उनका अत्यन्त ममतामयी हृदय विपदाओं से घिरे हुए व्यक्ति की सहायता के लिए हमेशा प्रेरित और अग्रसित रहा।

Scanned with CamScanner

You can download the Published Paper, e-Certificate(s) and Confirmation letter by logging into your account at AUTHOR HOME using your registration ID (IJRAR_234187) and email ID (ssoni77.ujn@gmail.com).

Following are the details regarding the published paper.	
Registration ID:	IJRAR_234187
Paper ID:	IJRAR21B1964
Paper Title:	शिक्षा में मातृभाषा की प्रासंगिकता शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में

Scanned with CamScanner

शिक्षा में मातृभाषा की प्रासंगिकता शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में

प्रोफेसर समीक्षा सोनी
प्रगति कॉलेज आफ प्रोफेशनल स्टडीज, उज्जैन
डॉ. रुपाली दिसावल
प्रगति कॉलेज आफ प्रोफेशनल स्टडीज, उज्जैन

शिक्षा और संस्कृति में आवश्यक संबंध है और सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक पक्षों से सीधा सरोकार है। इसीलिए शिक्षा में मातृभाषा की प्रभावी भूमिका है। शिक्षा का अर्थ है सीखना और सिखाना। शिक्षा शब्द का अर्थ हुआ सीखने और सिखाने की क्रिया। जिसे समाज की हम आज की एक पीढ़ी द्वारा अपनी अपनी अगली पीढ़ी को ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। जिसमें व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। मातृभाषा से तात्पर्य है, माँ की भाषा अर्थात वह भाषा जिसके द्वारा शिशु अपने भावों बोध एवं जीवन बोध का निर्माण करता है। लेकिन भारत जैसे बहुभाषी देश में मातृभाषा का एक और आयाम भी है वह भाषा भी मातृभाषा मातृभाषा है जिसके माध्यम से व्यक्ति विचार, संस्कार और जातीय इतिहास एवं एवं परंपरा से जुड़ता है। मातृभाषा एक भिन्न कोटि का सांस्कृतिक आचरण देती है जो किसी अन्य भाषा के साथ संभव नहीं। मातृभाषा के साथ कुछ ऐसे तत्व जुड़े होते हैं जिनके कारण उसकी संप्रेषणीयता उस भाषा के बोलने वालों के लिए अधिक मार्मिक होती है। साथ ही साथ जब मातृभाषा शिक्षा से जुड़ जाती है तब तो बालक अपनी भावनाएं अपने विचार अधिक क्षमता के साथ प्रस्तुत करने में समर्थ होता है। शिक्षा को समझने के कई सूत्र होते हैं मातृभाषा उनमें सर्वोपरि है। उसमें एक भिन्न बनावट होती है जो हमें अपनी जड़ों से जोड़े रखती है। एक विशिष्ट सामाजिक और मनोवैज्ञानिक बनावट जिसमें अस्मिता का रचाव होता है। जब भी बालक को अपनी बात रखने का अवसर प्रदान किया जाएगा तब वह अपनी मातृभाषा में जितनी सहजता तथा सौष्ठवता के साथ अपनी बात कह पाएगा वह अन्य भाषा में नहीं संभव है।

आत्म अन्वेषण की जो गहराई मातृभाषा के साथ संभव है वह अन्य भाषा के साथ संभव नहीं है। अन्य भाषा में बात कही जा सकती है परंतु उसमें मौलिकता तथा मार्मिकता संभव नहीं होती उसमें उतना अधिक जुड़ाव भी नहीं होता है।

शिक्षा में मातृभाषा से अपने परिवेश व पर्यावरण का बोध होता है। संबंधी करण की प्रक्रिया में मजबूती आती है मातृभाषा से मौखिक लय प्रकट होती है। अपनी संस्कृति की जड़ों में जाकर हमें आत्मविश्वास की अनुभूति होती है।

शिक्षा शास्त्र के विभिन्न शोध बताते हैं कि बालकों के पूर्ण मनो बौद्धिक विकास के लिए आरंभिक शिक्षण मातृभाषा में ही होना चाहिए। शिक्षण मातृभाषा में होने से बोध एवं संज्ञान क्षमता बढ़ती है। छोटे बालकों के संदर्भ में साधारणतया यह होता है कि गणित या सामान्य चीजें भी अंग्रेजी में उन्हें समझ नहीं आती जबकि वही चीजें मातृभाषा में बताने पर कठिन्य सार बहुत कम हो जाता है। शैक्षणिक मनोविज्ञान के अनुसार मातृभाषा में संप्रेषण एवं संज्ञान सहज तथा शीघ्र हो जाता है। इससे बालक कठिन चीजें भी आसानी से समझ लेते हैं सीख लेते हैं जबकि अन्य भाषा के लिए उन्हें रखना पड़ता है जोकि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से और बालकों के मानसिक विकास की दृष्टि से सही नहीं है।

आप स्वयं देखिए बचपन में पढ़ाए गए गणित के पहाड़े हमें अपनी मातृभाषा हिंदी के कारण ज्यादा अच्छे वह दक्षता के साथ याद रहते हैं। बजाय की अंग्रेजी माध्यम के दैनिक जीवन के कार्यों में भी हमें मातृभाषा में प्राप्त ज्ञान ही सहायक होता है क्योंकि समाज का हर व्यक्ति उस भाषा से जुड़ा होता है और समाज के सक्रिय सदस्य के रूप में भी मातृभाषा द्वारा प्राप्त ज्ञान मदद ही करता है।

वर्तमान में औपनिवेशिकता के दबाव में ऐसी भाषा में दुनिया देखने के लिए बालकों को विवश किया जा रहा है जो दूसरों की भाषा रही है उसमें हमारे बालकों को सच्चे सपने देखने लायक नहीं बनाता साम्राज्यवाद के कारण मातृभाषा का अवमूल्यन होता है जिससे लोग इस से कतराते हैं और अन्य भाषाओं के प्रभुत्व को महिमामंडित करते चले जाते हैं जोकि बालकों के लिए उनके भविष्य के लिए हानि प्रद है।

नवीन शिक्षा नीति 2020 में इस समस्या का हल प्रस्तुत हुआ है जिसमें कक्षा 8 तक की शिक्षा को मातृभाषा में ही अनिवार्य करने का प्रयास किया गया है। यदि मातृभाषा को आधार बनाया तो बालक भाषा, साहित्य, धर्म, कला, स्थापत्य, इतिहास और भूगोल आदि को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आसानी से हस्तांतरित कर पाएगी।

मातृभाषा जीवंत अभिव्यक्ति शिक्षा का सबसे सुंदर माध्यम है मातृभाषा न केवल सहज शिल्प है अपितु सबसे अर्थपूर्ण संभावना है। अन्य भाषाओं के प्रति उदार हो पा मातृभाषा का सबसे उज्जवल पक्ष है।

संदर्भ ग्रंथ-

के क्षत्रिय- मातृभाषा शिक्षण- विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
लाल रमण बिहारी- हिंदी शिक्षण- रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ
भाई योगेंद्र जीत- हिंदी भाषा शिक्षण- विनोद पुस्तक भंडार आगरा
दुबे सत्यनारायण-हिंदी शिक्षण- साहित्य प्रकाशन आगरा

Scanned with CamScanner

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138

An International Open Access Journal

The Board of

International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR)

Is hereby awarding this certificate to

à¤¸à¤®à¥€à¤•à¥•à¤·à¤¾ à¤¸à¥(à¤¨à¥€

In recognition of the publication of the paper entitled

Published in IJRAR (www.ijrar.org) UGC Approved (Journal No : 45602) & 5.75 Impact Factor

Volume 8 Issue 2 , Date of Publication June 2021 2021-06-02 04:14:48

PAPER ID : IJRAR21B1964

Registration ID : 234187

EDITOR IN CHIEF

UGC and ISSN Approved - International Peer Reviewed Journal, Refereed Journal, Indexed Journal, Impact Factor: 5.75 Google Scholar

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS | IJRAR

An International Open Access Journal / Approved by ISSN and UGC

Website: www.ijrar.org | Email id: editor@ijrar.org | ESTD: 2014

IJRAR | E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138

An International Open Access Journal

The Board of

International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR)

Is hereby awarding this certificate to

à¤¡à¥‰. à¤°à¥•à¤²à¤¾à¤¨à¥€ à¤¡à¤¿à¤¸à¤¾à¤¯à¤²

In recognition of the publication of the paper entitled

Published in IJRAR (www.ijrar.org) UGC Approved (Journal No : 45602) & 5.75 Impact Factor

Volume 8 Issue 2 , Date of Publication June 2021 2021-06-02 04:14:48

PAPER ID : IJRAR21B1964

Registration ID : 234187

EDITOR IN CHIEF

UGC and ISSN Approved - International Peer Reviewed Journal, Refereed Journal, Indexed Journal, Impact Factor: 5.75 Google Scholar

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS | IJRAR

An International Open Access Journal / Approved by ISSN and UGC

Website: www.ijrar.org | Email id: editor@ijrar.org | ESTD: 2014

IJRAR | E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138

Scanned with CamScanner

Issue-75, Vol-03, April 2021

Printing Area

International Peer Reviewed Multilingual Research Journal

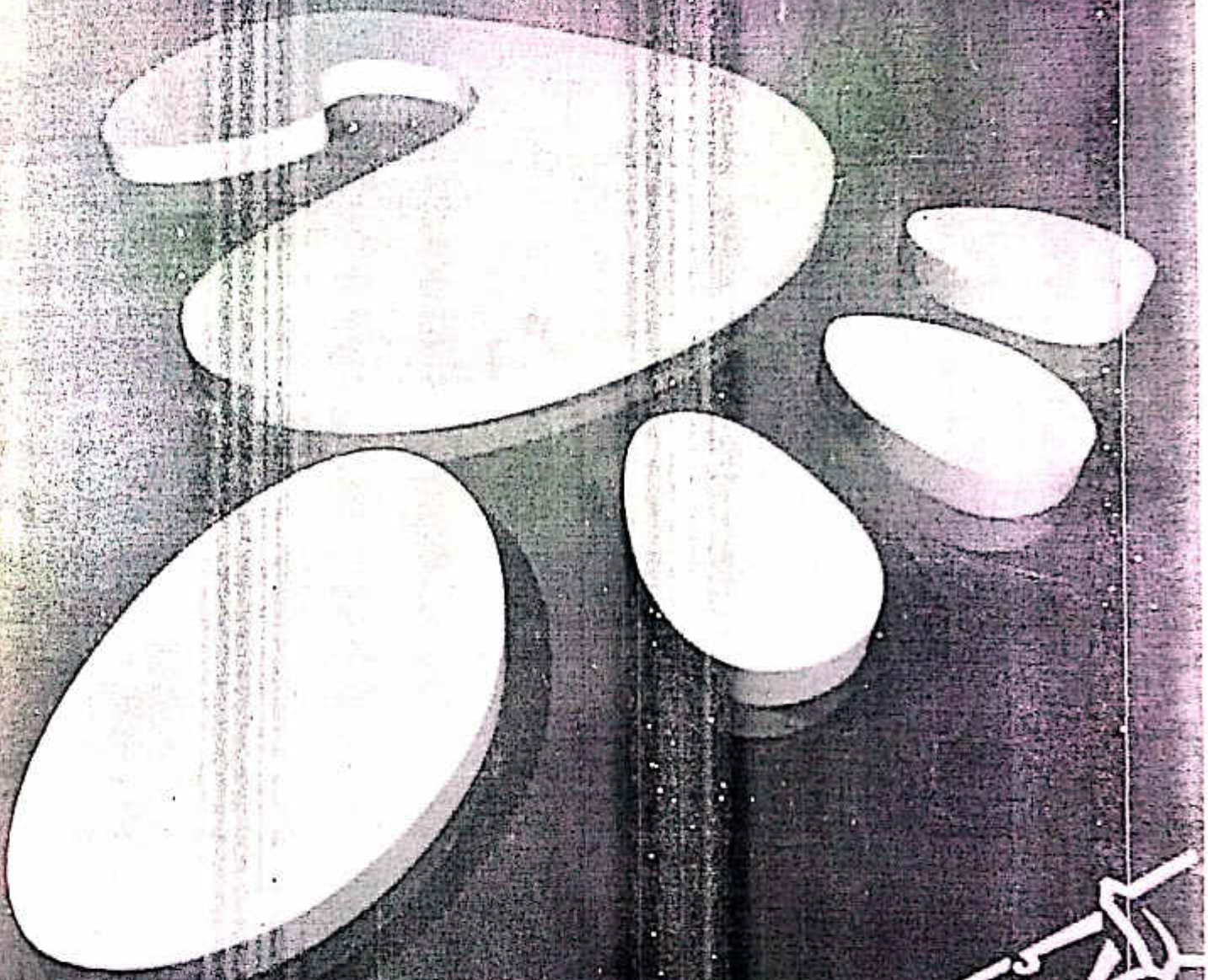

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

44

पद्धतियाँ और तकनीक — प्राचीन एवं अर्वाचीन

डॉ. रूपाली दिसावल
[illegible] कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज [illegible]
मुंबई, [illegible]

प्रो. समीक्षा सोनी
[illegible]

पद्धतियाँ और तकनीक अर्वाचीन और प्राचीन

****

[illegible] विधि :—

[illegible] इस ढंग से शिक्षक शिक्षार्थी को ज्ञान प्रदान [illegible] उसे शिक्षण विधि कहते हैं। शिक्षण विधि का [illegible] अर्थ देखें तो एक ओर तो इसके अंतर्गत [illegible] प्रणालियां एवं योजनाएँ अभिलक्षित की जाती [illegible] और शिक्षण की बहुत सी प्रक्रियाएँ भी [illegible] कर ली जाती है। किसी शिक्षक द्वारा की [illegible] वे विधियाँ जिनकी सहायता से शिक्षण [illegible] प्रभावशाली स्वतन्त्रता और आसान बनाया [illegible] जिससे विद्यार्थी सहज और सरलता से सीख [illegible] या कह सकते हैं कि शिक्षा ग्रहण करते हैं।

वैदिक युगीन शिक्षण विधियाँ":—

श्रवण विधि, व्याख्यान विधि, प्रश्नोत्तर और [illegible] विधि, तर्क विधि, प्रश्नोत्तर विधि।

बौद्ध कालीन शिक्षण विधियाँ":—

अनुकरण विधि, प्रश्नोत्तर विधि, व्याख्या [illegible] तर्क एवं वाद विवाद विधि, व्याख्यान विधि, [illegible] विधि, स्वाध्याय विधि।

मध्यकालीन इस्लामिक शिक्षण विधियाँ":—

व्याख्या भाषण विधि, प्रश्नोत्तर विधि, तर्क [illegible] अनुकरण, स्वाध्याय विधि, आधुनिक शिक्षा के [illegible] विभिन्न स्कूलों के माध्यम से नवीन शिक्षण [illegible] में करके सीखना, मॉडल विधि, अन्वेषण द्वारा सीखना, प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा सीखना तथा अनेक विधियों द्वारा शिक्षण कार्य किया गया।

तकनीकी अपनी स्वाभाविक विशेषताओं के फलस्वरूप यही चाहती है कि इसके उपयोग से किया जाने वाला कार्य आसान हो जाए और सर्वोत्तम परिणामों की प्राप्ति हो हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर तकनीकियों का शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग भी यही दर्शाता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया बहुत अधिक सहायता की कोई कसर नहीं छोड़ती।

वर्तमान समय कोरोना काल ने स्थिति को स्वयं सिद्ध कर दिया है। जिस मोबाईल को अनुशासनहीनता का सामान मानते हुए कक्षा से बाहर किया गया था वर्तमान समय में तकनीकी सहायता के बिना आज के समय में शिक्षण कार्य इसी मोबाईल से संभव हो पाया है। मोबाईल व तकनीकी सहायता के बिना आज के समय में शिक्षण कार्य संभव ही नहीं था तकनीकी का प्रयोग सही प्रकार से सही दिशा में किया जाना आवश्यक है। जिससे सर्वोत्तम परिणाम की प्राप्ति संभव हो।

शिक्षा में तकनीकी की अवधारणा और उपयोग क्षेत्र जितने ही काफी विस्तृत और व्यापक है। शिक्षा और शिक्षण का क्षेत्र चाहे औपचारिक हो या अनौपचारिक विद्यार्थी केंद्रित हो या अध्यापक केंद्रित व्यक्ति को या सामूहिक सभी के लिए शैक्षिक तकनीकी का प्रयोग लाभदायी सिद्ध हुआ है आवश्यक शिक्षण तकनीकी से एक अध्यापक कम समय में कम श्रमशक्ति लगाकर भी अपने शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से संपादित करता है। अधिक से अधिक शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति संभव हो पाती है।

शिक्षण तकनीकी शिक्षक को ज्ञान व कौशल प्रदान करती है। जिससे शिक्षण अधिगम परिस्थिति में उपलब्ध मानवीय तथा भौतिक संसाधनों को इस तरह व्यवस्थित संगठित समन्वित की जाएगी निर्धारित शिक्षण अधिगम उद्देश्यों को अधिकतम व प्रभावी उपलब्धि संभव हो साथ ही साथ शिक्षण तकनीकी एक शिक्षक को कौशल प्रदान करता है। कि वह विद्यार्थियों को प्रोत्साहित अभिप्रेरित तथा मार्गदर्शन प्रदान कर सके। साथ ही साथ शिक्षक को अंतिम मूल्यांकन में भी

गुणवत्तापूर्ण शिक्षण हेतु शिक्षक शिक्षा

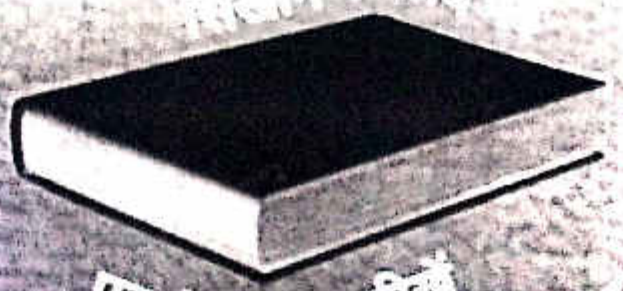

पढ़ाने के लिए सीखें

Scanned with CamScanner

५४	गुणवत्तापूर्ण शिक्षण हेतु शिक्षक शिक्षा		
५५	शिक्षक शिक्षा में योग शिक्षा	श्रीमती विजया कुशवाह श्रीमती समीक्षा सोनी	श्री सांई इन्स्टीट्युट ऑफ टेक्नालॉजी ,रतलाम प्रशान्ति कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, उज्जैन
५६	अध्यापक शिक्षा - अतीत और वर्तमान परीदृश्य	डॉ. सुरेखा जैन	महाराजा महाविद्यालय,उज्जैन
५७	शिक्षक शिक्षा एवं नवीन पाठ्यक्रम	डॉ. राजेश साकोरीकर	शास. शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय उज्जैन , (म.प्र.)
५८	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में योग का शैक्षिक महत्व	श्रीमती मंजुला काशिव एवं डॉ राजेश साकोरीकर	शोधार्थी, पाहेर ,उदयपुर एवं निर्देशक ,पाहेर ,उदयपुर (राजस्थान)
५९	Importance of Co-Curriculur Activities in Teacher Education	Dr. Sweta Talesara	Christian Eminent College of Education ,Indore(M.P.)
६०	शिक्षण गुणवत्ता में सुक्ष्म शिक्षण की उपयोगिता	प्रतिक मकवाना उज्जैन , (म.प्र.)	शोधार्थी, शास. शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय
६१	शिक्षक शिक्षा की गुणवता बढाने में पाठ्यक्रम की भुमिका	श्रीमती यर्मिष्ठा शेरवाल एवं डॉ. स्मिता मवालकर	शोधार्थी, शास. शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय उज्जैन, एवं निर्देशक सरस्वती शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन, (म.प्र.)

oooo

Scanned with CamScanner

शिक्षक शिक्षा में योग शिक्षा

- श्रीमती समीक्षा सोनी

वर्तमान युग में व्यक्ति भौतिकता की ओर तेजी से दोड़ रहा है। परिणामस्वरूप सभी क्षेत्रों में उसे प्रतियोगिता या प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। जिसके कारण तनाव, थकान, अशांति का शिकार होकर अनेक घातक बिमारियों से ग्रस्त होता जा रहा है। इससे ज्ञात होता है कि व्यक्ति प्रतिदिन उन्नति के स्थान पर अवनति की और अग्रसर हो रहा है। इसका प्रमुख कारण -दोषपूर्ण जीवन शैली। योग वस्तुतः एक जीवन शैली है, भारतीय ऋषि मुनियों ने योग को अपनी जीवन शैली में सम्मिलित किया था लेकिन तब योग केवल ऋषि तक ही सीमित था। आज योग का सभी दिशाओं में प्रसार हो रहा। पाश्चात्य जन भी अतिभोगवाद से उभरकर भारतीय परंपराओं एवं योग को आत्मसात् कर रहे है। योग वास्तव में मनुष्य को कार्यकुशल बनाता है और आज से इस दुषित वातावरण में संतुलित जीवन जीने की कला सिखाता है, योगाभ्यास से आत्मा की गुप्त शक्तियाँ जो सुप्तावस्था में होती है, जागृत हो जाती है,और उसमें अनेक गुणों, कलाओं व विशेषताओं का आविर्भाव होने लगता है। योग मनुष्य को कुशल प्रशासन की कला सिखाता है। मन के विकारों को नष्ट करने में सहायता करता है। योग को अपनाने पर जीवन में अत्यधिक परमानंद व जीवन के सच्चे सुख की अनुभूति होती है।

जीवन के प्रांरभ से मृत्यु पर्यन्त तक व्यक्ति का शिक्षण निरंतर चलता रहता है। जीवन के हर क्षण से कुछ शिक्षा ग्रहण करना मनुष्य कि प्रवृति होती है।

शिक्षा मनुष्य जीवन को प्रभावित करती है व परिर्वतन की प्रणेता होती है। शिक्षा का माध्यम शिक्षक होता है। वर्तमान समय में शिक्षको को जीवन के सभी आयामों व क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ बनने की आवश्यकता होती है।

शिक्षक द्वारा शिक्षा के माध्यम से शिक्षक को सर्वोत्तम बनाने का प्रयास किया जाता है। शिक्षक ,शिक्षा द्वारा शिक्षक को विभिन्न क्षेत्रों, विधाओं का ज्ञान व उनमें प्रवीणता व दक्षता लाने में सहायता करते है।

यह कहा भी जाता है कि :-"स्वस्थ्य शरीर में स्वस्थ्य मस्तिष्क का निवास होता है।"

योग शिक्षा द्वारा शिक्षको को मानसिक,शारीरिक एवं व्यावहारिक रूप से प्रबल बनाने का प्रयास किया जाता है। योग शिक्षा द्वारा व्यक्ति की क्षमताओं में वृद्धि होती है। क्षमताओं में वृद्धि के द्वारा शिक्षक की कार्य सफलता को निश्चित किया जा सकता है।

यदि शिक्षक का स्वयं का स्वास्थ्य अच्छा है तो वह अपनी पूरी कार्यक्षमता के साथ कार्य पूर्ण करने में लगा रहता है। योग शिक्षा के द्वारा शिक्षक की कार्यक्षमता में वृद्धि होगी और कार्य संपादन क्षमता भी बढ जाती है।

वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है। यह परिस्थितियाँ विद्यार्थी को बहुत अधिक प्रभावित करती है। विद्यार्थी अपने आसपास के वातावरण व परिस्थितियों से बहुत अधिक उद्वेलित होते है, विद्यार्थी के मन पर इनका गहरा प्रभाव पड़ता है। विद्यार्थी अपने पारिवारिक जीवन, आर्थिक अवस्था व सहपाठियों के साथ तुलना के कारण तनाव में रहते है। अनेक विद्यार्थी अपनी आर्थिक दशाओं के कारण हीनभावना से ग्रस्त रहते है। आर्थिक दशाओं, पारिवारिक परेशानीयों व अन्य समस्याओं के कारण कुछ विद्यार्थी अवसादग्रस्त हो जाते है। कुछ छात्रों में मानसिक रोगों के लक्षण स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगते है।

आर्थिक अभावों के कारण विद्यार्थियों की मानसिकता पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। वे गलत संगतीयों में पड़कर गलत राह पर चल पड़ते है, ऐसी परिस्थितियों में यदि उनका शिक्षक योग शिक्षा से शिक्षित होगा तो वह उन्हे योगाभ्यास करवाएगें, जिससे विद्यार्थियों कों मानसिक बल प्राप्त होगा, उनके जीवन में होने वाले परिवर्तनों, परेशानियों व समस्याओं को समझने व उनके हल करने की क्षमता उत्पन्न होगी। योग शिक्षा मानसिक व शारीरिक रूप से सबल बनाने का कार्य करती है। योग से जीवन में मानसिक शांति प्राप्त होगी। जीवन के विकास में अपनी शक्ति व उर्जा का सही प्रयोग कर पाएगें।

मानसिक अवसाद या मानसिक रोग से ग्रस्त विद्यार्थियों को इनसे उबरने के लिये योग शिक्षा बहुत अधिक सहायक होगी। योगशिक्षा से शिक्षित शिक्षक विद्यार्थियों के लिए बहुत अधिक सहायक होगी। योगशिक्ष से शिक्षित शिक्षक विद्यार्थियों के लिए बहुत अधिक सहायक बन सकते है। ध्यान व प्रणायाम द्वारा अवसाद से निकलने में उनकी सहायता कर सकते है।

अतः शिक्षक शिक्षा में योग शिक्षा को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए। योग शिक्षा द्वारा शिक्षक का सर्वांगीण विकास संभव किया जा सकेगा

योग विज्ञान भारतीय मनोविज्ञान का व्यावहारिक रूप है। इसे शिक्षा का आधार बनाना परमआवश्यक है, तभी हमारी शिक्षा सही अर्थो में फलदायी होगी।

Scanned with CamScanner

विद्यार्थी स्वयं पढ़कर समझते हैं और अभिव्यक्त करते हैं और सीखने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं इससे विषय वस्तु की अवधारणा विस्तृत रूप से विकसित होती है।

- विद्यार्थी विषय वस्तु का 50 प्रतिशत याद रखते हैं क्योंकि शिक्षण के दौरान ही उन्हें सीखने का मौका मिलता है।
- स्वयं करके सीखने के अवसर मिलते हैं। विद्यार्थी समूह में रहकर आपस में चर्चा करके नये ज्ञान की खोज करते हैं।
- परम्परागत शिक्षण में शिक्षण प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थियों में रुचि जाग्रत नहीं होती है।
- सक्रिय अधिगम प्रविधि सीखने को सुदृढ़ एवं सुनिश्चित करने वाली प्रक्रिया है।
- परम्परागत शिक्षण से हटकर शिक्षण में नवाचार करने के लिये रुचि जाग्रत होती है।

विभिन्न शोध एवं अनुभव के प्रमाण यह बताते हैं कि विद्यार्थी सबसे बेहतर तब सीखते हैं जब वे स्वयं विषयवस्तु के साथ जुड़ते हैं और सीखने में सक्रिय रूप से सहभागी होते हैं।

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि हमारे परम्परागत कक्षा वातावरण को अधिक सहज एवं बाल केन्द्रित बनाने, प्रत्येक बच्चे को अपनी स्वाभाविक गति से सीखने एवं व्यक्त करने के अवसर देने तथा बच्चे के प्रत्येक दिन को उपयोगी, मनोरंजक एवं सार्थक बनाने हेतु ALM परम्परागत शिक्षण से अधिक प्रभावी है।

सक्रिय अधिगम प्रविधि : दार्शनिक दृष्टिकोण

ज्योति मैवाल[1] एवं पल्लवी मैवाल[2]

अलग-अलग विचारकों ने बच्चों को अलग-अलग नजरिये से देखा है। कुछ ने कहा बच्चे खाली घड़े हैं, कुछ ने उन्हें गीली मिट्टी कहा तो कुछ को बच्चों का मन कोरी स्लेट नजर आया। जिस पर उन्हें अनुभव और ज्ञान को अंकित भर करना है अगर इस पर विचार करें तो पायेंगे कि यही दृष्टिकोण एक शिक्षक के रूप में हमारे कार्य की दिशा तय करता है कि हमें अपनी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को कैसे आगे बढ़ाना है।

दार्शनिक विचार

प्रसिद्ध विचारक दार्शनिक और शिक्षाविद् जान लॉक ने शिक्षा को बच्चों के स्वभाव के भीतर का कर्म माना है। शिक्षा को लॉक सद्गुणों और पालन-पोषण का सिद्धान्त और व्यवहार दोनों मानते हैं। यहाँ तक कि नैतिक नियम भी लॉक के लिए वे ही हैं, जो प्रकृति के नियम हैं या प्रकृति से ग्रहण किये गये हैं। लॉक किसी भी व्यक्ति के विकास का जीवन्त माध्यम मानते हैं उसके पर्यावरण को, जिसमें सीखने की सुविधा भी उपलब्ध हो और प्रतिभा के प्रस्फुटन के अवसर भी। लॉक मानते हैं कि दुनिया में ऐसी कोई वस्तु नहीं है। जिसके अन्दर कोई विचार निहित न हो और इस निहित विचार को खोजना और उसे क्रियान्वित करना ही ज्ञान विज्ञान और शिक्षा का काम है।

शिक्षा में सक्रिय एक ऐसा शब्द है जो स्वयं में ही परिभाषित है। मनुष्य के पास सोच है। अर्थात् बदलाव की चेतना, कल्पनाएं, क्रियाएं और अनुभव हैं। सक्रिय अधिगम प्रविधि के माध्यम से बालक की सोच चेतना तथा अनुभव को क्रियाशील कर उसे एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया जा सकता है

[1] प्राचार्य, प्रगति कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, उज्जैन
[2] शोधार्थी, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

Scanned with CamScanner

8th NATIONAL CONFERENCE

Of

Indian Psychometric & Educational Research Association (IPERA), Patna

On

Evaluation of Modern Educational System

Sub Themes :

- Quality Concern in Privatization of Higher Education.
- Pedagogical Approach of School Learning.
- Language, Knowledge and Curriculum Framework.
- Coping Strategies of Mental Disorders.
- Gender Discrimination and Women Empowerment in Weaker Sections.
- Communication Skills and Learning Assessment.
- Psychological Testing : A Mirror of Behaviour.
- Need of Counselling and Guidance Services.
- Psychological Consequences of Disaster and Its Management
- Socio-Cultural Contributions of Guru Govind Singh/Pt. Deen Dayal Upadhyaya

On

24, 25 and 26 September, 2016

IPERA

SOUVENIR

HAR PRASAD INSTITUTE OF BEHAVIOURAL STUDIES HIBS

Organized by & at

Harprasad Institute of Behavioural Studies (HIBS)

41-42, Hardeep Enclave, Sikandra, AGRA-282 007

Scanned with CamScanner

(63)

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के मूल्यांकन में निर्देशन एवं परामर्शन सेवा की आवश्यकता

डॉ. ज्योति मैवाल
प्राचार्या
प्रशान्ति कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्ट्डीज,
उज्जैन (म.प्र.)

डॉ. अनिल बाबू
असिस्टेंट प्रोफेसर,
सरस्वती शिक्षा महाविद्यालय,
मंदसौर (म.प्र.)

निर्देशन एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। जिसमें अधिक अनुभवी एवं जानकार व्यक्ति शिक्षार्थियों की समस्याओं के समायोजन हेतु मदद करता है। आधुनिक युग इतना बहुआयी विकास समेटे हुए है कि इसको परिभाषित करना कठिन हो गया है। कभी इसे विज्ञान एवं तकनीकी युग तो कभी आन्तरिक युग या क्रांति का युग कहते हैं। इस आधुनिक युग में जीवन के सभी क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन देखा जा सकता है। शिक्षा व्यवस्था भी इससे अछूती नहीं रही है। आज आधुनिक शिक्षा प्रक्रिया के स्वरूप में भी परिवर्तन आया है। अनेक प्रकार के नये-नये प्रोफेशनल पाठ्यक्रमों का प्रचलन तेजी से बढ़ा है। जिससे आज शिक्षार्थियों के सामने अनेक प्रकार की नयी-नयी कठिनाइयों उभर कर सामने आयी है। आज तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रगति ने शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन किये है। परम्परागत शिक्षा के स्थान पर तकनीकी शिक्षा के प्रचलन में वृद्धि हुई है। आज कम्प्युटर, इंटरनेट, ई-लर्निंग, ई-बुक, सक्रिय अधिगम प्रविधि, ऑन लाइन लेक्चर, के क्षेत्र में प्रगति हुई है निर्देशन एवं परामर्शन प्रक्रिया के माध्यम से आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में हम वह लौ जगा सकते है, जहाँ ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी एवं सायबर युग के साथ कदम मिलाकर शिक्षार्थियों में मल्टी डायमेनशनल पर्सनलिटी डेवलप कर उन्हें आधुनिक शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ सकते हैं।

(64)

मनोविकारों से मुकाबला करने में यौगिक परामर्श व योग चिकित्सा (दर्शन) की भूमिका

डॉ. निशा जोशी
आचार्य, योग अध्ययनशाला, दे.अ.वि.वि., इन्दौर (म.प्र.)

आधुनिक जीवन शैली के परिणामस्वरूप कई मानसिक रोग उभर कर आ रहे हैं, इसका मुख्य कारण है हमारी भौतिकवादी, स्पर्धात्मक व अव्यवस्थित जीवन शैली। मनोविज्ञान की दृष्टि से यदि हम देखें तो मनोविकार किसी व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य की वह स्थिति है जिसे किसी स्वस्थ व्यक्ति से तुलना करने पर 'सामान्य' नहीं कहा जा सकता। या हम कह सकते हैं किसी व्यक्ति के असामान्य और अनुचित व्यवहार ही मनोविकार है। मनोविकारों के कई कारक हैं जिनमें आनुवांशिकता, कमजोर व्यक्तित्व, सहनशीलता का अभाव, बाल्यावस्था के अनुभव, पारिवारिक पर्यावरण, शारीरिक कमियाँ इत्यादि। इन कारकों के परिणामस्वरूप कई प्रकार के मनोविकार उत्पन्न हो जाते हैं - जैसे बाल्यावस्था के विकार, व्यग्रता विकार, मनोदशा विकार -

Scanned with CamScanner

Institutional Development Plan (IDP, OHEPEE) Cell

RAMA DEVI WOMEN'S UNIVERSITY

Vidya Vihar, Bhubaneswar-751022, Odisha, India

www.rdwuniversity.nic.in

Faculty Development Programme on

'Research Methodology and Project Writing'

07-11 July, 2021

CERTIFICATE

This is to certify that

SHAMSHER SINGH KAKA

PRASANTI COLLEGE OF PROFESSIONAL STUDIES,UJJAIN M.P

has successfully completed Five Days Online Faculty Development Programme on "Research Methodology and Project Writing" organized by Institutional Development Plan (IDP, OHEPEE), Cell of Rama Devi Women's University, Vidya Vihar, Bhubaneswar, Odisha held during 07-11 July, 2021.

Dr. Bibudhendu Pati
Dy. Coordinator, IDP &
Organizing Secretary, FDP

Prof. Chandi Charan Rath
Coordinator, IDP & Convener, FDP

Prof. Sasmita Mohanty
Chairperson, P.G. Council

Scanned with CamScanner

National Symposium
On
"Health and Happiness"
6th March 2019
DEVI AHILYA VISHWAVIDYALAYA, INDORE
(Accredited with Grade 'A' by NAAC)

CERTIFICATE

This is to certify that Ms. / Mr. / Dr. SHAMSHER SINGH KAKA.....
has presented poster entitled . TEACHER'S ROLE ESTABLISHING HEALTH AND HAPPINESS
..... in National Symposium,
On **"Health and Happiness"**, organized by *ANAND CELL, D.A.V.V., Indore*, on March 6th 2019.

Prof (Dr.) Namrata Sharma
Co-Convener

Prof (Dr.) Anand Kar
Convener

Scanned with CamScanner